ई-समाचार

द्विमासिक समाचार पत्रिका

अंक - 11

मई-जून वर्ष - 2016

विषय सूची

* अभिकलनात्मक एकॉउस्टिक पर अल्पावधि पाठ्यक्रम
* बधाइयाँ
* सहयोगात्मक अनुसंधान हेतु चीन विश्वविद्यालय के साथ समझौता
* संपादकीय
* उत्पादन दक्षता : सिद्धांत एवं प्रथा पर अल्पावधि पाठ्यक्रम
* जैव ऊर्जा अंतरण पर अल्पावधि पाठ्यक्रम
* स्टार्ट अप केंद्र का उद्घाटन
* शैक्षणिक गतिविधियाँ
* नियुक्तियाँ
* अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
* हिंदी कार्यशाला
* साहित्य स्तंभ - " सुमित्रानंदन पंथ

अभिकलनात्मक एकॉउस्टिक पर अल्पावधि पाठ्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर स्थित यांत्रिकी अभियांत्रिकी विद्यापीठ ने भारत सरकार के शैक्षणिक नेटवर्क वैश्विक पहल (जीयान) के तहत दिनांक 23 मई से 03 जून 2016 को उभरती आवश्यकताओं के अभिलकनात्मक एकाउस्टिक पर अल्पावधि पाठ्यक्रम का आयोजन किया। प्रो. दत्ता गाइतोंडे, ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी एवं प्रो. तपन के. सेनगुप्ता, भा.प्रौ.सं. कानपुर इस पाठ्यक्रम के अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संकाय सदस्य के रूप में उपस्थित थे। इस पाठ्यक्रम में कुल 37 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संपादक मंडल

मार्गदर्शक : डॉ. राज कुमार सिंह (पीआईसी, राजभाषा)

सलाहकार : डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस एवं डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस

संपादक : श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बधाइयाँ

- डॉ. राजन, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत का सदस्य चुना गया।
- डॉ. प्रशांत कुमार साहू, सह प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत का सदस्य चुना गया।

सहयोगात्मक अनुसंधान हेतु चीन विश्वविद्यालय के साथ समझौता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर,ओडिशा के खनिज़, धातुकर्म एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विद्यापीठ ने इंजीनियरिंग सेटंर ऑफ मैटेरियल्स, मैनुफैक्चरिंग, स्कूल ऑफ मैटरियल साईंस एंड इंजीनियरिंग, संघाई जियो तोंग विश्वविद्यालय के साथ 26 मई 2016 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। यह समझौता ज्ञापन भारत के राष्ट्रपति के 24-27 मई 2016 के चीन दौरे के दौरान प्रो. आर.वी.राजकुमार, निदेशक, भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर एवं डॉ. मिंगजु जिया, एसजेटीयू, चीन (प्रो. जिंगाउ ली) के हस्ताक्षर से हुआ। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर पेकिंग यूनिवर्सिटी, बिजिंग, चीन में माननीय राष्ट्रपति की उपस्थिति में किया गया जिसमें अन्य भा.प्रौ.संस्थानें/ रा.प्रौ.संस्थानें के प्रतिनिधि, केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति एवं वस्त्र मंत्रालय, भारत, चीन के शिक्षा एवं प्रतिष्ठित शिक्षाविदों की उपस्थिति में हुआ। यह भारत और चीन के विश्वविद्यालयों के बीच होने वाले 10 समझौता ज्ञापनों में से एक है।

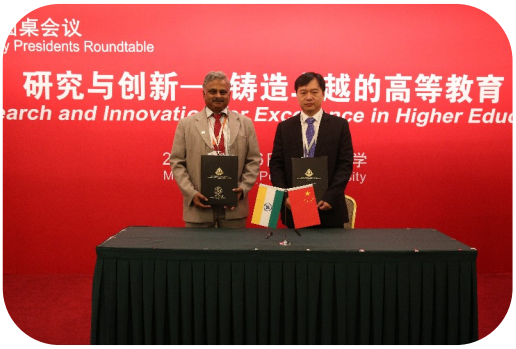

खनिज़, धातुकर्म एवं पदार्थ अभियांत्रिकी, भा.प्रौ.सं भुवनेश्वर और एसजेटीयू लाइट मैटल्स एवं सम्मिश्रों के ठोसकरण एवं प्रसंस्करण, पदार्थों, ईंधन कोशिका और बैटरीज़, नैनोपदार्थ, सूक्ष्मविद्युतयांत्रिकी प्रणाली (मेम्स) के प्रतिरूपण एवं अनुकरण एवं पदार्थों के पुनर्चक्रीकरण के बीच सहयोगात्मक प्रयासों के लिए किया गया है।

इस समझौता ज्ञापन में शोधकर्ताओं सहित संकाय सदस्यों, पोस्ट डॉक्टरल फैलो, वरिष्ठ अवर स्नातक छात्रों एवं स्नातक छात्रों का समवन्यन, वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक पदार्थों का विनिमय, सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रम, संयुक्त कार्यशालाएं एवं सम्मेलन का समन्वयन, संयुक्त कार्यशालाएं एवं सम्मेलन और छात्र इंटर्नशिप एवं उद्यमशीलता की सुविधा प्रदान करना शामिल है।

संपादकीय.....

ई-समाचार का 11 वाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता का आभास हो रहा है। इस अंक में हमने मई-जून 2016 के दौरान संस्थान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की मुख्य पहल जीयान पाठ्यक्रम से संबंधित खबरों को प्रकाशित किया है। जीयान पाठ्यक्रम एक नई पहल जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञों के अनुभवों को सांझा कर नई योजना निर्माण करने में सहायता करती है।

इस अंक में संस्थान द्वारा खोले गए स्टार्ट अप केंद्र से संबंधित खबरों को प्रकाशित है। सर्वविदित है कि स्टार्ट अप भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य स्टार्ट अप और नये विचारों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हों। संस्थान भी इस दिशा में कार्यरत है और नव उद्यम के लिए प्रेरित करता है ।

इस अंक में हमने 21 जून 2016 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अनुपालन से संबंधित खबरों को प्रकाशित किया है। योग

हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सर्वविदित है कि 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में प्रधानमंत्री के आह्वान पर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्राप्त हुई। योग एक प्राचीन पद्धति है जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का कार्य होता है। दैनिक जीवन में योग का अभ्यास निरंतर स्वस्थ रखता है और मानसिक तकलीफों को भी दूर करता है। हमें अपने जीवन में योग का महत्व समझना चाहिए और इसे अपनाना चाहिए।

इस अंक के साहित्य स्तंभ के अधीन हमने छायावादी के प्रवर्तकों में से एक सुमित्रानंदन पंथ की जन्म जयंती पर उनके छोटे से जीवन वृत्त के साथ उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह पल्लव की एक कविता याचना को प्रकाशित कर स्नेह पूर्वक श्रद्धा दी है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी पत्रिका को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य देंगे जिससे कि हम इसे और बेहतर बनाने हेतु निरंतर प्रयास करते रहे। - **नितिन जैन**

उत्पादन क्षमता : सिद्धांत एवं प्रथा पर अल्पावधि पाठ्यक्रम

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर के मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंध विद्यापीठ द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के जीयान कार्यक्रम के तहत दिनांक 30 मई से 08 जून, 2016 तक "उत्पादन दक्षता : सिद्धांत एवं प्रथा" पर अल्पावधि पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन एवं अध्यक्षता प्रो. सुजीत रॉय, संकायाध्यक्ष (सतत् शिक्षा) द्वारा की गई। कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे भा.प्रौ.सं. कानपुर, भा.प्रौ.सं. खड़गपुर, भा.प्रौ.सं. इंदौर, भा.प्रौ.सं. मद्रास, भा.प्रौ.सं. रोपड़, भा.प्रौ.सं. बॉम्बे, भा.प्रौ.सं. रुड़की, एनआईटी, राउरकेला, केंद्रीय विश्वविद्यालय जम्मू, अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय, असम विश्वविद्यालय, उत्कल विश्वविद्यालय, रेवेंशा विश्वविद्यालय, गुवाहटी विश्वविद्यालय सहित अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं एवं संकाय सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कुल 64 प्रतिभागी थे।

प्रो. कलिअप्पा कालिराजन, आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी एवं प्रो. बिरेश साहू, एक्साईएमबी भुवनेश्वर इस अल्पावधि पाठ्यक्रम के अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित थे।

पाठ्यक्रम की शरुआत करते हुए डॉ. नरेश चंद्र साहू ने प्रतिनिधियों एवं प्रतिभागियों को इस अल्पावधि पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में भारतीय अर्थव्यवस्था के तेज़ी से विकास पर प्रकाश डाला और आज की दुनिया को उन्नत औद्योगिकी, उन्नत देश के रूप में संबोधित किया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में भारतीय अर्थव्यवस्था विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन क्षमता को बढ़ाते हुए विकास के उच्च पथ को प्राप्त कर सकती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उत्पादन क्षमता में सुधार करने के साथ "हरित विकास" एवं कम संसाधनों के साथ अत्याधिक सामान एवं सेवाएं के लक्ष्य को प्राप्त करने पर जानकारी प्रदान की।

प्रो. कालिअप्पा कालिराजन, अतिथि व्याख्याता ने भारत में गरीबी कम करने के लिए उत्पादन क्षमता के महत्व एवं जीवन के बेहतर स्तर को प्राप्त करने के लिए उच्च आर्थिक विकास की देखरेख पर प्रकाश डाला।

जैव ऊर्जा अंतरण पर अल्पावधि पाठ्यक्रम

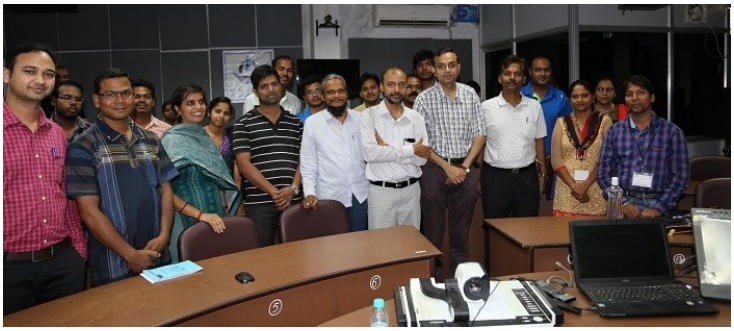

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित जीयान पाठ्यक्रम के अधीन "जैवऊर्जा अंतरण" पर दिनांक 06-17 जून, 2016 तक अल्पावधि पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों एवं छात्रों को जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी, आयुर्विज्ञान, औषधीय विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी एवं रासायनिक/यांत्रिकीय अभियांत्रिकी के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त चिकित्सक और इंजीनियरों के बीच एक संबंध स्थापित कर उनकी दूरियों को कम करना था। इस विशेष पाठ्यक्रम में विभिन्न संस्थानों (जैसे भा.प्रौ.सं. कानपुर, एमएनएनआईटी इलाहबाद, जीईसी औरंगाबाद, एससीटीसीई, त्रिरुवेंथापुरम, केआईआईटी भुवनेश्वर, सीईटी भुवनेश्वर, वीएसएसयूटी बुर्ला इत्यादि) से लगभग 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

देश एवं विदेश के विशिष्ट प्राध्यापकों ने पाठ्यक्रम से संबंधित विभिन्न विषयों पर विशेष व्याख्यान प्रदान किया। प्रो. सुनील कुमार, न्यूयार्क विश्वविद्यालय (एनवाईयू), ब्रुकलिन, यूएसए जीयान पाठ्यक्रम के अतिथि व्याख्याता थे। प्रो. मोस्ताफा सदोकी (प्रो. सेंट जॉन विश्वविद्यालय, न्यू यार्क), डॉ. प्रोबधन फनिंद्रे, श्री पंकज राजपूत (एनवाईयू, ब्रुकलिन) ने इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य से संबंधित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

पाठ्यक्रम में, चिकित्सा परिप्रेक्ष्यों पर जानकारी प्रदान करने के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भुवनेश्वर के प्रो. (डॉ.) डी.के. परिडा एवं प्रो. (डॉ.) एम. मंगराज ने कैंसर उपचार के लिए मानव मनोविज्ञान एवं विकिरण पर प्रेरक व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके साथ ही, प्रो. सुमन चक्रवर्ती (प्राध्यापक, एमई विभाग एवं प्रमुख, आईएमएसटी) भा.प्रौ.सं. खड़गपुर, जिन्हें सूक्ष्मतरल एवं जैवसूक्ष्मतरलगतिकि के अनुसंधान विषयों के विभिन्न छोरों में उत्कृष्ठ अनुसंधान कार्य के लिए प्रतिष्ठित भटनागर प्राप्त हुआ था, ने आधुनिक औषध सुपर्दगी एवं खुराक अनुमान पर गहराई से प्रकाश डालते हुए व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस पाठ्यक्रम के मुख्य समन्वयक, प्रो. एस.के. महापात्र ने ट्युमर के सटीक उपचार हेतु मॉडल के विकास पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सह-समन्वयक डॉ. पी.रथ ने विभिन्न जैवऊर्जा अंतरण प्रतिरूप एवं इसके प्रभावी सामान्य सॉल्वर के विकास पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। सफल आयोजन के साथ कार्यक्रम का समापन 17जून 2016 को हुआ।

स्टार्ट अप केंद्र का उद्घाटन

भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने अपने तोषाली भवन परिसर में स्टार्ट अप केंद्र की शुरुआत की। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने स्टार्ट अप केंद्र की स्थापना के लिए रु. 1.50 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की है। प्रो. आर. वी. राजकुमार, निदेशक, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर ने 20 जून 2016 को स्टार्ट अप केंद्र का उद्घाटन किया। स्टार्ट अप केंद्र ने अपनी स्थापना के प्रथम वर्ष में ही 10 स्टार्ट अप के नामांकन की कल्पना की है। स्टार्ट अप केंद्र नामांकन करने वालों को स्टार्टअप के लिए कार्य स्थल के साथ प्रारंभिक राशि के रूप में रु. 2.5 लाख रुपए प्रदान करेगा। बहुत ही जल्द, स्टार्ट अप केंद्र उभरते हुए उद्यमियों तथा ओडिशा राज्य एवं आस पास के सक्षम नव स्नातकों को इस सुविधा का लाभ लेने के लिए आवेदन आमंत्रित करेगा।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने भा.प्रौ.सं. गुवाहटी में दिनांक 17-20 मई 2016 को आयोजित "एसईएसटीईसी 2016 सम्मेलन" में " सिंथेसिस एंड कैरेक्टराइजेशन ऑफ क्विनोलाइन-बेस्ड/टेर्पी एनालॉग टीएसआईएल एंड देअर एक्स्ट्रेक्शन स्टडीज़ फॉर लैंथानाइड्स/एक्टिनाइड्स पर मौखिक प्रस्तुति प्रस्तुत की।

2. डॉ. श्रीनिवास रामानुजम कन्न, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए 01-30 जून 2016 तक इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मिटियोरॉलॉजी को दौरा किया।

3. डॉ. नीलाद्री बिहारी पुहान, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने भा.वि.संस्थान बैंगलूर में दिनांक 11.06.2016 से 16.06.2016 के दौरान आयोजित " सिग्नल प्रोसेसिंग एंड कम्यनिकेशन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (एसपीसीओएम) में " ए स्पार्स कॉन्सेप्ट कोडेड स्पैशियो-स्पैक्ट्रल फिचर रिप्रेजेंटेशन फॉर हैंडरिटैन कैरेक्टर रिकॉगनिजिशन" पर मौखिक प्रस्तुति की।

4. डॉ. आर.के.पंडा, प्राध्यापक, आधारिक संरचना विद्यापीठ ने सेन फ्रेनसिस्को, यूएसे में दिनांक 09 से 10 जून 2016 को आयोजित एन्वॉयरोमेंट एंड नैचुरल रिसोर्सेस पर 18वाँ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में " एनालाइसिस ऑफ ट्रेंड एंड वेरिएबिलिटी ऑफ रैनफॉल इन द मिड-महानदी रिवर बेसिन ऑफ ईस्टर्न इंडिया" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

5. डॉ. पी. बेरा, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने एटलांटा, यूएस में दिनांक 10 से 14 जून 2016 के दौरान आयोजित सुरक्षा पर 11वां आईईईई अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में "ए नोवल सैक्यूर एंड एफिसिएंट पॉलिसी मैनेजमेंट फ्रेमवर्क फॉर सॉफ्टवेयर डिफाइन्ड नेटवर्क" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

6. डॉ. श्यामल चटर्जी, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने हेल्महोल्टज़ जेंट्रम, ड्रेसडेन, जर्मनी में दिनांक 11-27 जून 2016 के दौरान आयोजित "आयन इर्रेडिएशन इंडस्युड मॉडिफिकेशन ऑफ वन-डाइमेंशनल नैनोमेटेरियल्स" पर सहयोगात्मक अनुसंधान में भाग लिया।

7. डॉ. सुशांत कुमार पाठी, सहायक पुरस्तकालयाध्यक्ष ने भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में दिनांक 12.06.2016 से 19.06.2016 के दौरान आयोजित ऑपेन सोर्स सॉफ्टवेयर फॉर लाइब्रेरी मैनेजमेंट (ओएसएसएलएम 2016) पर राष्ट्रीय कार्यशाला में सहभागिता की।

नियुक्तियाँ

1. श्री यमुना प्रसाद ने दिनांक 16.05.2016 को संस्थान में कनिष्ठ अधीक्षक पद पर कार्यभार ग्रहण किया। उन्हें कुलसचिव कार्यालय में पदस्थापित किया गया।

2. श्री सत्यब्रत घोष ने दिनांक 17.05.2016 को संस्थान में कनिष्ठ अधीक्षक पद पर कार्यभार ग्रहण किया। उन्हें संकायाध्यक्ष का कार्यालय में पदस्थापित किया गया।

3. डॉ. मानव मोहन महापात्रा ने दिनांक 19.05.2016 को संस्थान के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में सह प्राध्यापक पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

4. प्रो. रबींद्र कुमार पंडा ने दिनांक 01.06.2016 को संस्थान के आधारिक संरचना विद्यापीठ में प्राध्यापक पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

5. श्री अभिजीत पंडा ने दिनांक 02.06.2016 को संस्थान में छात्र सलाहकार पद पर कार्यभार ग्रहण किया। उन्हें छात्र परामर्श केंद्र में पदस्थापित किया गया।

6. डॉ. अंकुर गुप्ता ने दिनांक 29.06.2016 को संस्थान में अभ्यागत प्राध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान ने छात्रों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों की सहभागिता और पूरे उत्साह के साथ "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" मनाया। कार्यक्रम का प्रथम दो दिन (19 एवं 20 जून) प्रस्तावना एवं अभ्यास सत्र के लिए समर्पित था जहाँ प्रतिभागियों को योग, प्रणायम एवं ध्यान के बारे में जानकारी प्रदान करने के साथ अभ्यास कराया गया। दिनांक 21 जून को बृहद योग अभ्यास के साथ छोटे प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम की शरुआत हुई।

कार्यक्रम का आरंभ संस्थान निदेशक प्रो. आर. वी. राज कुमार द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। उन्होंने योग एवं इसके महत्व पर उपस्थित सहभागियों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान अपने दैनिक जीवन में उनके द्वारा दशकों से किए जा रहे योग अभ्यास के बारे में अपने अनुभव सांझा किए। तत्पश्चात उन्होंने प्रतिभागियों के साथ योग अभ्यास किया। इस विशेष कार्यक्रम में डॉ. मंगलतीर्थम, निदेशक, नूतन संजीवनी संस्थान, देवघर को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने योग से संबंधित वैज्ञानिक प्रासंगिक एवं इसके लाभ के बारे में जानकारी प्रस्ततुत की। उन्होंने योग के लाभ के साथ दैनिक जीवन में इसके महत्व पर प्रकाशन डाला और बताया कि कैसे योग हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए तनाव को दूर करता है।

कार्यक्रम के अंत में डीएवी विद्यालय – यूनिट VIII के छात्रों ने लघु योग नृत्य प्रस्तुत किया और डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, ईएए समन्वयक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

हिंदी कार्यशाला

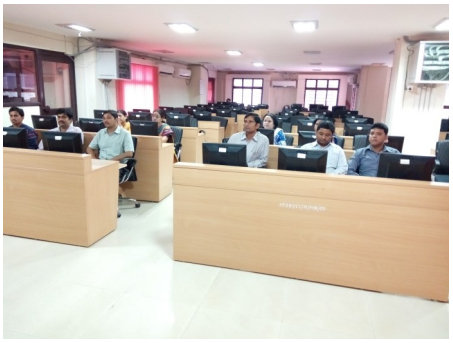

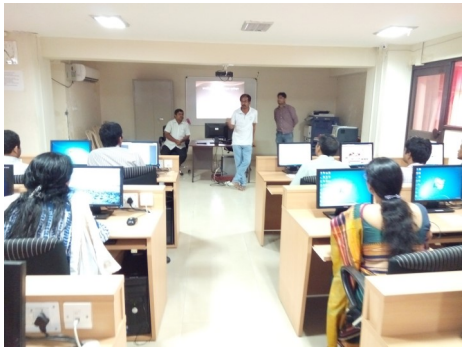

राजभाषा एकक ने संस्थान के कर्मचारियों के लिए 23-24 जून 2016 के दौरान "सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन में हिंदी का महत्व" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का आयोजन कंप्यूटर प्रयोगशाला ए-2 ब्लॉक, तोषाली भवन में किया गया था। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक तथा श्री देबराज रथ, कार्यवाहक कुलसचिव ने की।

इस दो दिवसीय कार्यशाला का प्रारंभ अतिथियों के पुष्पगुच्छ के स्वागत के साथ हुआ। डॉ. राज कुमार सिंह, प्राध्यापक प्रभारी ने अपने संबोधन में संस्थान में राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन के लिए सभी कर्मचारियों को आगे बढ़ने हेतु अपील की। उन्होंने अपने संबोधन में संस्थान में राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन की प्रशंसा करते हुए सभी सदस्यों को यह जानकारी दी कि संस्थान निदेशक को राजभाषा विभाग द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर का अध्यक्ष चुना गया है। हमें अपने संस्था में राजभाषा की गतिविधियों के माध्यम से नगरीय स्तर पर एक मार्ग तैयार करना है।

कार्यवाहक कुलसचिव श्री देबराज रथ ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन पर जोर दिया और कहा कि हमें निरंतर अपने दैनिक कामकाजों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाना है।

कार्यशाला के दौरान श्री नितिन जैन ने प्रतिभागियों के बीच राजभाषा नीति एवं हमारी भूमिका के साथ हिंदी टंकण, हिंदी पत्राचार से संबंधित विषयों पर जानकारी प्रदान की और आशा व्यक्त की इन प्रयोगों से हम निरंतर राजभाषा नीति का कार्यान्वयन बढ़ाएंगे।

साहित्य मंच

सुमित्रानन्दन पन्त

बीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध छायावादी कवियों का उत्थान काल था। उसी समय अल्मोड़ा निवासी सुमित्रानंदन पंत उस नये युग के प्रवर्तक के रूप में हिन्दी साहित्य में अभिहित हुये। इस युग को जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और रामकुमार वर्मा जैसे छायावादी प्रकृति उपासक-सौन्दर्य पूजक कवियों का युग कहा जाता है। सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति चित्रण इन सब में श्रेष्ठ था। उनका जन्म ही बर्फ़ से आच्छादित पर्वतों की अत्यंत आकर्षक घाटी अल्मोड़ा में हुआ था, जिसका प्राकृतिक सौन्दर्य उनकी आत्मा में आत्मसात हो चुका था। झरना, बर्फ, पुष्प, लता, भंवरा गुंजन, उषा किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढ़े गगन से उतरती संध्या ये सब तो सहज रूप से काव्य का उपादान बने। निसर्ग के उपादानों का प्रतीक व बिम्ब के रूप में प्रयोग उनके काव्य की विशेषता रही। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षण का केंद्र बिंदु था। गौर वर्ण, सुंदर सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल, उंची नाजुक कवि का प्रतीक समा शारीरिक सौष्ठव।

सुमित्रानंदन पंत का उनका जन्म अल्मोड़ा ज़िले के कौसानी नामक ग्राम में मई 20, 1900 को हुआ। जन्म के छह घंटे बाद ही उनकी माँ को क्रूर मृत्यु ने छीन लिया। उन्हें उनकी दादी ने पाला पोसा। शिशु का नाम रखा गया गुसाई दत्त। वे सात भाई बहनों में सबसे छोटे थे।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अल्मोड़ा में हुई। सन् 1918 में वे अपने मँझले भाई के साथ काशी आ गए और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से मैट्रिक उत्तीर्ण करने के बाद वे इलाहाबाद चले गए। उन्हें अपना नाम पसंद नहीं था, इसलिए

उन्होंने अपना नाम रख लिया - सुमित्रानंदन पंत। यहाँ म्योर कॉलेज में उन्होंने इंटर में प्रवेश लिया। महात्मा गांधी के आह्वान पर अगले वर्ष उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बँगला और अंग्रेजी का अध्ययन करने लगे।

सुमित्रानंदन सात वर्ष की उम्र में, जब वे चौथी कक्षा में पढ़ रहे थे, कविता लिखने लग गए थे। सन् 1909 से 1918 के काल को स्वयं कवि ने अपने कवि-जीवन का प्रथम चरण माना है। इस काल की कविताएँ वीणा में संकलित हैं। सन् 1922 में उच्छवास और 1928 में पल्लव का प्रकाशन हुआ। सुमित्रानंदन पंत की कुछ अन्य काव्य कृतियाँ हैं - ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, युंगात, स्वर्ण-किरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, निदेबरा, सत्यकाम आदि। उनके जीवनकाल में उनकी २८ पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें कविताएं, पद्य-नाटक और निबंध शामिल हैं। श्री सुमित्रानंदन पंत अपने विस्तृत वाङमय में एक विचारक, दार्शनिक और मानवतावादी के रूप में सामने आते हैं किंतु उनकी सबसे कलात्मक कविताएं 'पल्लव' में संकलित हैं, जो 1918 से 1925 तक लिखी गई जो 32 कविताओं का संग्रह है। उनका रचा हुआ संपूर्ण साहित्य 'सत्यम शिवम सुंदरम' के संपूर्ण आदर्शों से प्रभावित होते हुए भी समय के साथ निरंतर बदलता रहा है। जहां प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के रमणीय चित्र मिलते हैं वहीं दूसरे चरण की कविताओं में छायावाद की सूक्ष्म कल्पनाओं व कोमल भावनाओं के और अंतिम चरण की कविताओं में प्रगतिवाद और विचारशीलता के। उनकी सबसे बाद की कविताएं अरविंद दर्शन और मानव कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

हिंदी साहित्य की इस अनवरत सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण(1961), ज्ञानपीठ(1968) तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से अलंकृत किया गया। सुमित्रानंदन पंत के नाम पर कौशानी में उनके पुराने घर को जिसमें वे बचपन में रहा करते थे, सुमित्रानंदन पंत वीथिका के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत प्रयोग की वस्तुओं जैसे कपड़ों, कविताओं की मूल पांडुलिपियों, छायाचित्रों, पत्रों और पुरस्कारों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें एक पुस्तकालय भी है, जिसमें उनकी व्यक्तिगत तथा उनसे संबंधित पुस्तकों का संग्रह है। उनका देहांत 1977 में हुआ। आधी शताब्दी से भी अधिक लंबे उनके रचनाकर्म में आधुनिक हिंदी कविता का पूरा एक युग समाया हुआ है। उनकी जन्म जयंती पर प्रस्तुत है उनकी प्रसिद्ध कविता संग्रह पल्लव की एक कविता “याचना” -

“याचना”

बना मधुर मेरा जीवन!
नव नव सुमनों से चुन चुन कर
धूलि, सुरभि, मधुरस, हिम-कण,
मेरे उर की मृदु-कलिका में
भरदे, करदे विकसित मन।

बना मधुर मेरा भाषण!
बंशी-से ही कर दे मेरे
सरल प्राण औ’ सरस वचन,
जैसा जैसा मुझको छेड़ें
बोलूँ अधिक मधुर, मोहन;
जो अकर्ण-अहि को भी सहसा
करदे मन्त्र-मुग्ध, नत-फन,
रोम रोम के छिद्रों से मा!
फूटे तेरा राग गहन,
बना मधुर मेरा तन, मन! रचना -